09-10-2026 प्रात:मुरली ओम् शान्ति "बापदादा" मधुबन

"मीठे बच्चे – तुम जानते हो कि सभी आत्मायें बेहद के बाप से पढ़ेंगी नहीं लेकिन साथ में जरूर जायेंगी"

परमधाम जाना है क्योंकि ड्रामा का चक्र अब पूरा होता है। यह भी तुम जानते हो कि यह बहुत गन्दी दुनिया है। परमात्मा को तो कोई भी नहीं जानते, न जानेंगे इसलिए कहा जाता है विनाश काले विपरीत बुद्धि। उन्हों के लिए तो यह नर्क ही स्वर्ग के समान है। उन्हों की बुद्धि में यह बातें बैठ न

Points: ज्ञान योग धारणा सेवा M.imp. 4

19-11-2025 प्रात:मुरली ओम् शान्ति "बापदादा" मधुबन

सकें। तुम बच्चों को यह सब विचार सागर मंथन करने के लिए बहुत एकान्त चाहिए। यहाँ तो

प्रश्न:- चक्रवर्ती राजा बनने वाले बच्चों को किस बात का बहुत-बहुत कदर होगा?

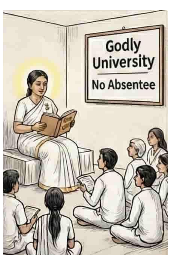

उत्तर:- उन्हें पढ़ाई का बहुत कदर होगा। कहाँ भी रहते पढ़ाई जरूर पढ़ेंगे। साथ-साथ मित्र सम्बन्धियों से तोड़ निभाते याद में रहने का अभ्यास करेंगे और सबको यही पैगाम देंगे कि बाप को याद करो तो शान्तिधाम-सुखधाम में चले जायेंगे। इस श्रीमत पर पूरा पूरा चलने वाले बच्चे ही चक्रवर्ती बनते हैं।

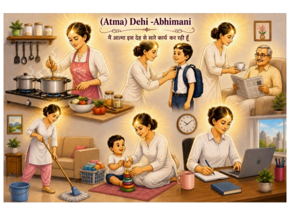

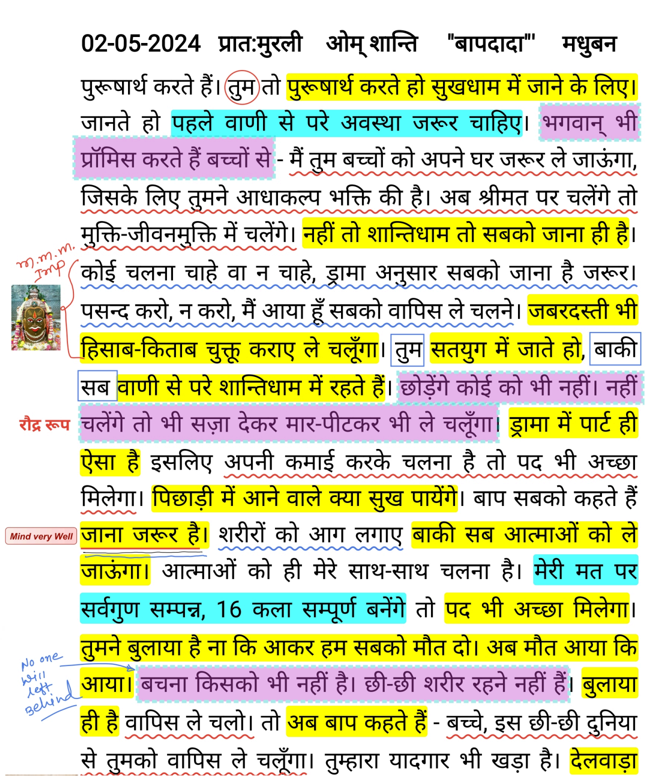

02-05-2024 प्रात:मुरली ओम् शान्ति "बापदादा" मधुबन

पुरूषार्थ करते हैं। तुम तो पुरूषार्थ करते हो सुखधाम में जाने के लिए। जानते हो पहले वाणी से परे अवस्था जरूर चाहिए। भगवान् भी प्रॉमिस करते हैं बच्चों से - मैं तुम बच्चों को अपने घर जरूर ले जाऊंगा, जिसके लिए तुमने आधाकल्प भक्ति की है। अब श्रीमत पर चलेंगे तो मुक्ति-जीवनमुक्ति में चलेंगे। नहीं तो शान्तिधाम तो सबको जाना ही है। कोई चलना चाहे वा न चाहे, ड्रामा अनुसार सबको जाना है जरूर। पसन्द करो, न करो, मैं आया हूँ सबको वापिस ले चलने। जबरदस्ती भी हिसाब-किताब चुक्तू कराए ले चलूँगा। तुम सतयुग में जाते हो, बाकी सब वाणी से परे शान्तिधाम में रहते हैं। छोड़ेंगे कोई को भी नहीं। नहीं चलेंगे तो भी सज़ा देकर मार-पीटकर भी ले चलूँगा। ड्रामा में पार्ट ही ऐसा है इसलिए अपनी कमाई करके चलना है तो पद भी अच्छा मिलेगा। पिछाड़ी में आने वाले क्या सुख पायेंगे। बाप सबको कहते हैं जाना जरूर है। शरीरों को आग लगाए बाकी सब आत्माओं को ले जाऊंगा। आत्माओं को ही मेरे साथ-साथ चलना है। मेरी मत पर सर्वगुण सम्पन्न, 16 कला सम्पूर्ण बनेंगे तो पद भी अच्छा मिलेगा। तुमने बुलाया है ना कि आकर हम सबको मौत दो। अब मौत आया कि आया। बचना किसको भी नहीं है। छी-छी शरीर रहने नहीं हैं। बुलाया ही है वापिस ले चलो। तो अब बाप कहते हैं - बच्चे, इस छी-छी दुनिया से तुमको वापिस ले चलूँगा। तुम्हारा यादगार भी खड़ा है। देलवाड़ा

m.m.m. Imp

रौद्र रूप

Mind very Well

No one will left Behind

Points: ज्ञान योग

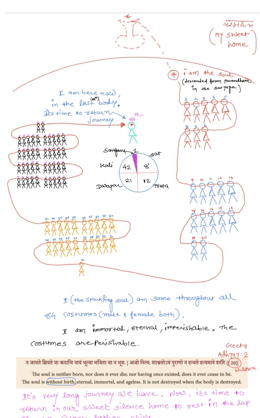

ओम् शान्ति। बाप को, सभी रूहानी बच्चों को साथ-साथ जो भी सृष्टि भर में जीव आत्मायें हैं, उन सब जीव आत्माओं को वापिस ले जाना ही है क्योंकि अब अन्धियारी रात पूरी होती है। पुरानी दुनिया पूरी हो नई दुनिया की स्थापना हो रही है। दुनिया तो है परन्तु पुरानी से नई होती है। सतयुग आदि में बरोबर आदि सनातन देवी-देवता धर्म ही था। अब वह सूर्यवंशी, चन्द्रवंशी नहीं हैं। बाप समझाते हैं उन्हों ने पुनर्जन्म लेते-लेते अब 84 जन्म पूरे किये हैं। इस समय सब पार्टधारी तमोप्रधान हो गये हैं। चाहते भी हैं रामराज्य, नई दुनिया, नई देहली चाहिए। जैसे बच्चे कहते हैं ना - हमको फलानी नई चीज़ चाहिए। यह भी कहते हैं बाबा नई दुनिया के लिए हमको नये वस्त्र चाहिए। दीपमाला पर मनुष्य नये वस्त्र पहनते हैं। श्रीकृष्ण जयन्ती पर नये वस्त्र पहनने की बात नहीं रहती। खास दीपमाला पर नये वस्त्र पहनने के लिए खरीददारी आदि बहुत करते हैं। दीपमाला पर ज्योत जगाते हैं। तुम्हारी अब ज्योत जगी है, तुम्हें फिर औरों की भी ज्योत जगानी है। उन्हों की है भक्ति मार्ग की दीपमाला, तुम्हारी है ज्ञान की दीपमाला। तुमको कोई कपड़े आदि नहीं बदलने हैं।

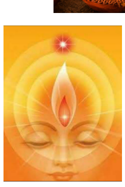

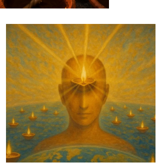

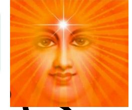

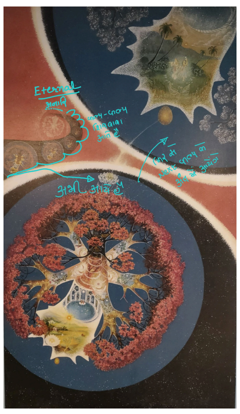

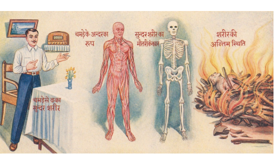

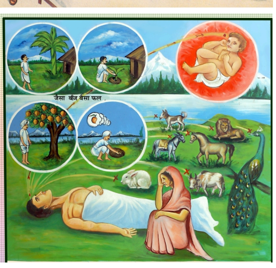

तुम्हारी जब पूरी ज्योत जग जायेगी तो फिर नई दुनिया में नये वस्त्र मिलेंगे। बाप कहते हैं मैं सबको ले जाऊंगा। कोई चाहे वा न चाहे। बुलाते भी हैं - हे पतित-पावन आओ। वह फिर कहते हैं लिबरेटर आओ। कोई किस भाषा में कहते हैं, कोई किस भाषा में। मैं कल्प- कल्प आकर सबको ले जाता हूँ। सतयुग में तो बहुत थोड़े मनुष्य होते हैं। अब कितने ढेर पार्टधारी हैं। यह हैं जीव आत्मायें। शरीर को जीव कहा जाता है। ऐसे नहीं कि जीव कहता है कि मैं एक आत्मा छोड़ दूसरा लेता हूँ। नहीं, आत्मा कहती है मैं एक शरीर छोड़ दूसरा लेता हूँ। परन्तु यह भी किसको पता नहीं है कि हम 84 जन्म लेते हैं। ऐसे भी नहीं सबको 84 जन्म मिलते हैं। सबका अपना हिसाब है। जो पहले-पहले आते हैं वह जरूर जास्ती जन्म लेंगे। जास्ती से जास्ती 84 जन्म। कम से कम एक जन्म भी होता है। यह बाप बैठ समझाते हैं, सबको तो नहीं पढ़ायेंगे। परन्तु सबको साथ जरूर ले जायेंगे। ड्रामा प्लैन अनुसार मेरा पार्ट है सबको साथ ले जाने का। दुनिया यह नहीं जानती कि पुरानी दुनिया खत्म होने वाली है। बाप आकर जरूर नई दुनिया की स्थापना करेंगे। मनुष्य को

महाकाल उवाच: रौद्र रूप

चढ़ाओ नशा...

How lucky and Great we are...!

अगर हम हर रोज की मुरली को साधारण रीति से सुन रहे हैं
तो यह देखिए जब अंत में सबको पता पड़ेगा कि स्वयं भगवान आया हुआ था और इन्हो को हर रोज महावाक्य/मुरली सुना रहे थे तो उनका अफसोस कुछ ऐसा होगा👇

Click

Points: ज्ञान योग धारणा सेवा M.imp.

But we know, How Lucky & Great we are..!

09-10-2026 प्रात:मुरली ओम् शान्ति "बापदादा" मधुबन

रचता और रचना के आदि-मध्य-अन्त का रिचंक मात्र भी नॉलेज नहीं है। हाँ, भक्ति मार्ग का पता है।

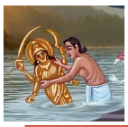

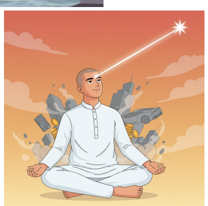

भक्ति मार्ग की रसम-रिवाज अलग, ज्ञान मार्ग की रसम - रिवाज बिल्कुल ही अलग है। यह तो हो नहीं सकता कि सतयुग से कलियुग तक भक्ति ही हो।

गाया भी जाता है ज्ञान दिन, भक्ति रात। अन्धियारी रात में मनुष्य धक्के खाते हैं।

बाप कहते हैं ठिक्कर भित्तर में भी जाकर मुझे ढूँढते हैं। कोई हनुमान का साक्षात्कार करते, कोई गणेश का साक्षात्कार करते।

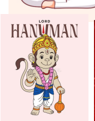

अब वह सब भगवान तो नहीं हैं। मेरा अपना शरीर तो कोई है नहीं। माया रावण ने सबको बुद्ध बना दिया है।

भारतवासियों को यह भी पता नहीं कि राम राज्य किसको कहा जाता है। यह ध्यान में भी आता है कि लक्ष्मी-नारायण का राज्य इस दुनिया पर था। सिर्फ कह देते हैं - रामराज्य चाहिए। राम कोई रघुपति वाला नहीं। उनके लिए शास्त्रों में बहुत उल्टी बातें लिख दी हैं।

मनुष्य मौत से कितना डरते हैं। लाइफ को बचाने के लिए दुआयें माँगते रहते हैं। अभी तो ढेर (Wholesale) मरने वाले हैं। उनके लिए क्या कहेंगे!

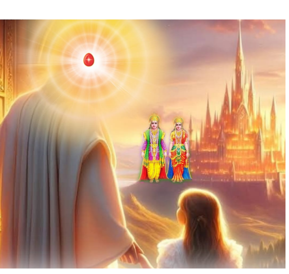

बाप को बुलाया ही इसलिए है कि बाबा हमको पावन दुनिया में ले चलो। शान्तिधाम में शरीरों को

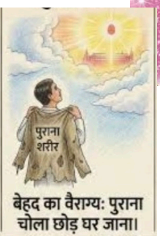

तो नहीं ले जाऊंगा। वहाँ तो आत्मायें जायेंगी। यह तो पुराना छी-छी शरीर है। भंभोर को आग लगनी है, इसलिए आग का गोला (बॉम्ब्स) बना रहे हैं। अब वह कहते हैं - बॉम्ब्स न बनायें। अब इतनी भी समझ नहीं है तो जिनके पास जास्ती बॉम्ब्स होंगे, वह जरूर शक्तिशाली हो जायेंगे। फिर दूसरे अपने को बचा कैसे सकेंगे, अगर बाम्ब्स न बनायें तो। अब वह जब सब समुद्र में डालें तब वह भी बनाना बंद करें। परन्तु समुद्र से भी बादल पानी खींचता है, वह बरसात पड़ेगी तो सारा नुकसान हो जायेगा। खेती आदि जल जायेगी इसलिए ड्रामा में युक्ति रची हुई है। पहले ये बॉम्ब्स नहीं थे, अब निकले हैं इसलिए यह सारी धम-धम मच रही है। अब यह तुम जानते हो - यह सब है भावी। तुम्हारे में भी बहुतों को विनाश की भावी का निश्चय नहीं है। अगर होता तो योग में बहुत अच्छी तरह रहते। योगबल से विश्व की बादशाही लेनी है। तुम्हारा सब कुछ गुप्त है, सिखलाने वाला भी गुप्त है। इन आंखों से देखने में नहीं आते हैं। अब तुमने आत्मा को रियलाइज किया है कि मुझ आत्मा में 84 जन्मों का पार्ट भरा हुआ है। अहम् आत्मा अविनाशी हैं। यह है अति गुह्य

Simple Math..

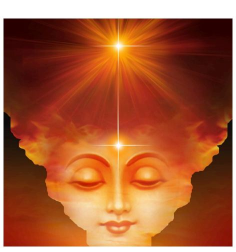

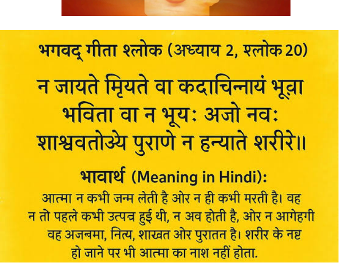

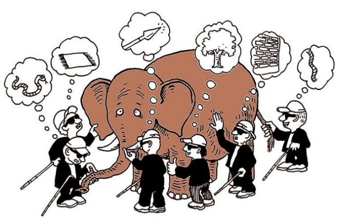

बात। अखबार में भी लिखा है कि आत्मा क्या है जो शरीर में रहती है? यह कोई बताये तो उनको लाखों रूपया मिल सकता है। "आत्मा क्या है, कहाँ से आती है? कैसे पार्ट बजाती है?" यह कोई भी नहीं जानते। कोई कहते बुदबुदा है, कोई कहते ब्रह्म-तत्व बड़ी ज्योति है, उसमें आत्मायें लीन हो जायेंगी। अनेक प्रकार की बातें करते रहते हैं। तुम जानते हो आत्मा बिन्दी समान है। उसमें पार्ट बजाने की नूँध है। यह ड्रामा अनादि बना बनाया है, उनका कभी विनाश नहीं होता है। आत्मा भी अविनाशी है। उनको वही पार्ट बजाना है। फ़र्क नहीं पड़ सकता। यह सब बातें उनकी बुद्धि में बैठेंगी, जिनके कल्प पहले बैठी होंगी।

समझा?

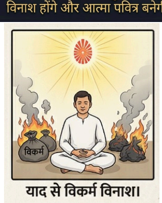

बाबा कहते हैं - इतने ढेर मनुष्यों को मैं कैसे पढ़ाऊंगा। हाँ, इतना बच्चे समझेंगे कि बाप कहते हैं मामेकम् याद करो तो तुम्हारे विकर्म विनाश होंगे। सबको पैगाम मिलेगा, बाप यह मन्त्र देते हैं सबके लिए। बाबा समझाते हैं तुम बच्चों को दैवीगुण धारण

करने हैं। अवगुणों को छोड़ना है। देह-अभिमान को छोड़ो। फिर भी छोड़ते नहीं हैं। उन बिचारों को क्या मिलेगा? एक दो से प्यार से नहीं चलते हैं। तुमको बहुत मीठा बनना है। बाप प्यार का सागर है। तुम भी उनके बच्चे हो तो तुमको बहुत प्यारा बनना है।

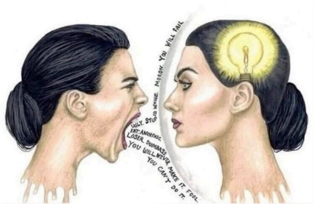

कभी कोई कितना भी गुस्सा करे, स्तुति-निंदा आदि सब कुछ सहन करना है। कोई देवाला मारता है तो समझते हैं - बाबा अब सहायता करे। अरे यह तो तुम्हारा कर्मभोग है, सो तो तुमको सहन करना है।

Subtle Point to understand

बाप इसमें क्या करे। बाप आया हुआ है सब आत्माओं को ले जाने। यह भी तुम बच्चे ही जानते हो।

दुनिया में सब घोर अन्धियारे में हैं। भक्तिमार्ग में जरूर भक्तों का मान होना चाहिए। शंकराचार्य आदि यह सब भगत हैं। उन्हों को कहेंगे पवित्र भगत। भक्ति कल्ट तो है ना। जो पवित्र रहते हैं, उन्हों के बड़े-बड़े अखाड़े बने हुए हैं। उनका मान कितना है।

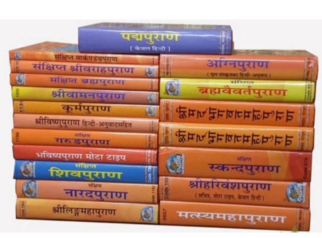

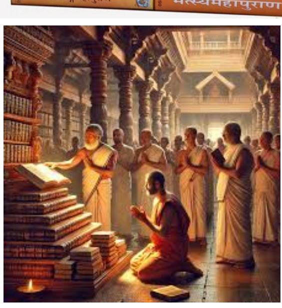

रिलीजस किताबों का भी बहुत मान है। उनको बड़ी-बड़ी परिक्रमा दिलाते हैं। भक्ति का मान बहुत है। ज्ञान का किसको पता भी नहीं है। तुम जब देवता बनते हो तो तुम्हारी कितनी महिमा होती है। ऐसा कोई नहीं होगा जिनके माँ बाप किसी न किसी

मन्दिर आदि में नहीं जाते होंगे। कुछ न कुछ भक्ति के चिन्ह घर में जरूर होते हैं। "हे भगवान कहना," यह भी भक्ति मार्ग है। अब तुम बेहद बाप के बने हो। यह बाप, यह दादा, इसलिए त्रिमूर्ति के चित्र पर समझाना बड़ा अच्छा है। भल कोई कहे दादा को क्यों रखा है? अरे प्रजापिता ब्रह्मा तो जरूर यहाँ चाहिए ना। यह तो झाड़ में नीचे तपस्या में बैठे हैं। परन्तु वह बदलते रहते हैं। यह जो (मम्मा - बाबा) मुख्य हैं वह सदैव कायम हैं। इसमें बच्चों को बहुत मीठा बनना है। चलन बड़ी रॉयल होनी चाहिए। बात कम करनी चाहिए। पहले-पहले बाप का परिचय देना है। जास्ती तीक-तीक करना फालतू है। बहुत थोड़ा बोलो। तुमने भी भक्ति मार्ग में बहुत बोला है, रड़ी मारी है। कितने धक्के खाये हैं। अब तुमको सिम्पल समझाते हैं -सिर्फ बाबा को याद करो तो योगबल से विश्व के मालिक बन सकते हो। आगे चल यह पता पड़ेगा, नम्बरवार कौन-कौन क्या बनते हैं। प्रजा का हिसाब थोड़ेही निकालेंगे। वह तो लाखों करोड़ों हो जायेंगे। जो ब्राह्मण बनेंगे वही सूर्यवंशी चन्द्रवंशी बनेंगे। आगे चलकर बहुत याद करने लग पड़ेंगे। जब मौत सामने आयेगा फिर वैराग्य आयेगा। यह वही महाभारत

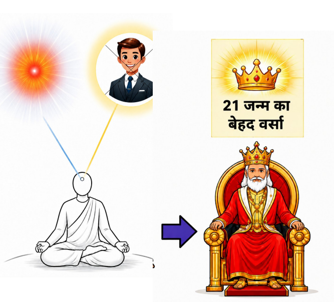

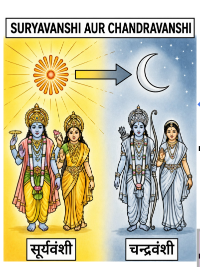

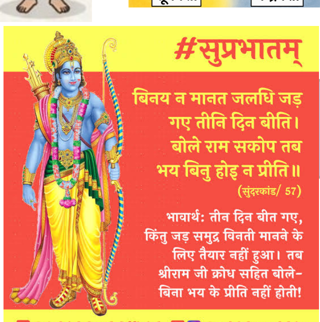

Points: ज्ञान योग धारणा M.imp.

भय बिन होय न प्रीत।

09-10-2026 प्रात:मुरली ओम् शान्ति "बापदादा" मधुबन

लड़ाई है। सभी आत्मायें हिसाब- किताब चुक्तू कर जायेंगी, इसको कयामत का समय कहा जाता है। इतने सब शरीर खत्म होंगे। नेचुरल कैलेमिटीज होनी है, यह भी ड्रामा में नूँध है। नई बात नही हैं। फैमन (अकाल) के कारण मनुष्य भूखों मरते हैं।

बाप जानते हैं मेरे बच्चे बहुत दु:खी हैं। सबको दु:खों से छुड़ाकर वापिस ले जाऊंगा। बाप कहते हैं - यह सब आपस में लड़ेंगे। मक्खन फिर भी तुमको मिलना है, सारे विश्व के तुम मालिक बनते हो। मुख में चन्द्रमा का साक्षात्कार करते थे ना! मुख में यह विश्व का गोला आ जाता है। तुम प्रिन्स प्रिन्सेज बनते हो। सारी सृष्टि जैसे तुम्हारी मुट्ठी में है। मुख में भी, मुट्ठी में भी दिखाते हैं। अब स्वर्ग का गोला तुम्हारे मुख में है। तुम जानते हो योगबल से हम विश्व के मालिक बनते हैं। योग से हेल्थ और ज्ञान से वेल्थ मिलती है। तुम चक्रवर्ती राजा बनते हो। परन्तु बच्चों को इतना कदर नहीं है - पढ़ाई का। भल बदली हो जाती है परन्तु बाप कहते हैं कहाँ भी रहो लेकिन

चढ़ाओ नशा...

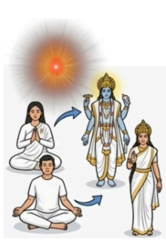

Attention Please..!

09-10-2026 प्रात:मुरली ओम् शान्ति 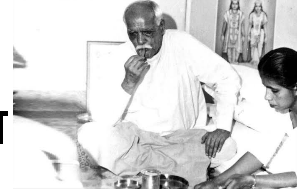 मधुबन

पढ़ो जरूर। पवित्र रहो, खान-पान शुद्ध रखो। सबसे तोड़ भी निभाना है। यह दुनिया दु:ख देने वाली है।

मुख्य है काम कटारी चलाना, वह भी मुश्किल छोड़ते हैं। कुछ कहो तो ट्रेटर बन जाते हैं। फिर अबलाओं पर कितने विघ्न आते हैं।

यह आर्य समाजी तो अभी आये हैं। पिछाड़ी की टाली है। देवताओं को मानने वाले नहीं हैं।

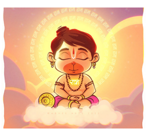

महावीर, हनुमान का नाम है, वीरता दिखाई है। जैनियों ने भी महावीर नाम रख दिया है। अभी अर्थ तो तुम समझते हो। तुम बच्चे भी महावीर हो जो रावण पर जीत पाते हो।

यह है सारी योगबल की बात। तुम बाप को याद करते हो, उससे तुम्हारे विकर्म विनाश होंगे। फिर शान्ति-सुख में चले जायेंगे। यह पैगाम सबको देना है। यह स्थापना बड़ी वन्डरफुल है, इनको कोई नहीं जानते। तुम्हारे में भी नम्बरवार हैं।

कोई भी अन्दर विकार नहीं होने चाहिए। आत्मा को बाप ज्ञान दे रहे हैं। आत्मा विकारी बनती है, सब कुछ आत्मा ही करती है। तो अब बाप की श्रीमत पर पूरा चलना चाहिए।

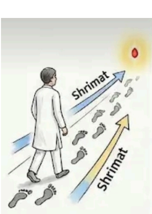

सतगुरू के सम्मुख रहकर निंदा कराई तो ठौर नहीं पा सकेंगे। कोई भी पाप करना यह निंदा हुई। टीचर की मत पर नहीं चलेंगे तो ठौर नहीं पायेंगे, नापास हो

जायेंगे। टीचर की शिक्षा लेते रहेंगे तो पास विद् ऑनर होंगे। वह हैं हद की बातें, यह हैं बेहद की बातें। भगवान कौन है, दुनिया में यह किसको मालूम नहीं है। माया भी सतो रजो तमो होती है। अब माया भी तमोप्रधान है। देखो, क्या-क्या करते रहते हैं। कोई में बुद्धि नहीं है कि हम किसको आग लगाते हैं। यह भी ड्रामा में नूँध है। जो कुछ होता है ड्रामा अनुसार होता है। यादवों का प्लैन, कौरवों का प्लैन और पाण्डवों का प्लैन, क्या-क्या करत भये। पाण्डवों को ऊंच ते ऊंच प्लैन बताने वाला है बाप। नई दुनिया में लक्ष्मी-नारायण का राज्य था। अभी पुरानी दुनिया का विनाश होना है। तुम मोस्ट बील्वेड बाप से मोस्ट बील्वेड बच्चे वर्सा ले रहे हो। बाप बिगर कोई कह न सके कि हम तुमको साथ ले जायेंगे। वह कह देते सब परमात्मा ही परमात्मा हैं। फिर यह कहना आयेगा कैसे। यह सब बातें तुम बच्चे ही जानते हो और न जाने कोई। अच्छा।

Point to be Noted

स्वयं भगवान

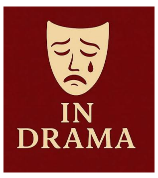

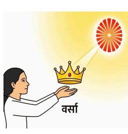

चढ़ाओ नशा...

How lucky and Great we are...!

09-10-2026 प्रात:मुरली ओम् शान्ति "बापदादा" मधुबन

मीठे-मीठे सिकीलधे बच्चों प्रति मात-पिता बापदादा का याद-प्यार और गुडमार्निंग। रूहानी बाप की रूहानी बच्चों को नमस्ते।

धारणा के लिए मुख्य सार:-

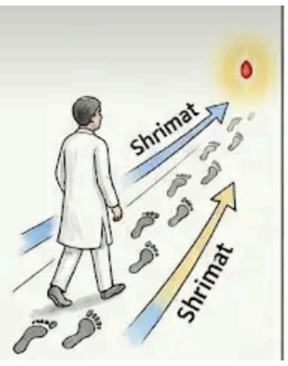

1) विनाश की भावी को जान पूरा-पूरा श्रीमत पर चलना है। याद के बल से विश्व की बादशाही लेने का पुरुषार्थ करना है, अपनी जगी हुई ज्योत से सबकी ज्योत जगाकर सच्ची दीपावली मनानी है।

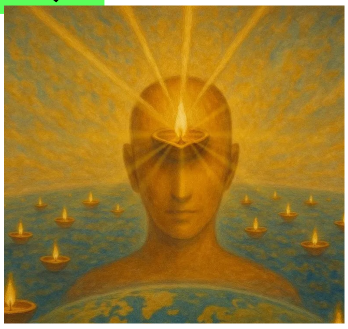

2) स्तुति-निंदा सब कुछ सहन करते हुए बाप समान प्यार का सागर बनना है। चलन बड़ी रॉयल रखनी है। बात बहुत कम करनी है।

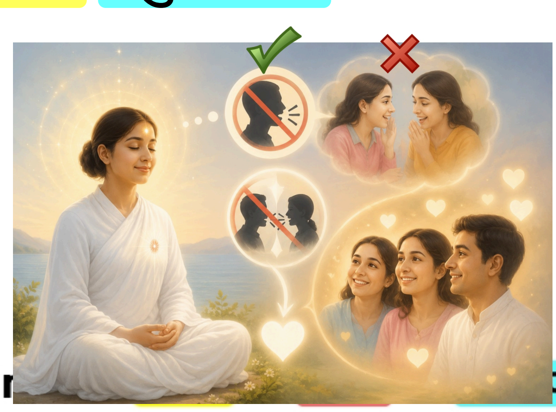

09-10-2026 प्रात:मुरली ओम् शान्ति "बापदादा" मधुबन

वरदान:- समय पर हर गुण वा शक्ति को यूज़ करने वाले अनुभवी मूर्त भव

ब्राह्मण जीवन की विशेषता है अनुभव। अगर एक भी गुण वा शक्ति की अनुभूति नहीं तो कभी न कभी विघ्न के वश हो जायेंगे। Guaranteed

Call of time/समय की पुकार

अभी अनुभूति का कोर्स शुरू करो। हर गुण वा शक्ति रूपी खजाने को यूज करो। जिस समय जिस गुण की आवश्यकता है उस समय उसका स्वरूप बन जाओ। नॉलेज की रीति से बुद्धि के लाकर में खजाने को रख नहीं दो, यूज़ करो तब विजयी बन सकेंगे और वाह रे मैं का गीत सदा गाते रहेंगे।

स्लोगन: नाजुकपन के संकल्पों को समाप्त कर शक्तिशाली संकल्प रचने वाले ही डबल लाइट रहते हैं।

Points: धारणा सेवा M.imp.

एक समय की बात है। एक नदी में एक महात्मा स्नान कर रहे थे। तभी एक बिच्छू जो पानी में डूब रहा था, उसे बचाते हुए बिच्छु ने महात्मा को डंक मार दिया। महात्मा ने उसे कई बार बचाने की कोशिश की। बिच्छू ने उन्हें बार-बार डंक मारा। अंतत: महात्मा ने उसे बचाकर नदी के किनारे रख दिया। थोड़ी दूर खड़े यह सब महात्मा के शिष्य देख रहे थे। जैसे ही वे नदी से बाहर आये तो शिष्यों ने पूछा कि जब वह बिच्छू आपको बार-बार डंक मार रहा था तो आपको उसे बचाने की क्या आवश्यकता थी।

तब महात्मा ने कहा- बिच्छू एक छोटा जीव है, उसका कर्म काटना है, जब वह अपना कर्तव्य नहीं भूला, तो मैं मनुष्य हूँ मेरा कर्तव्य दया करना है तो मैं अपना कर्तव्य कैसे भूल सकता हूँ।

शिक्षा- मार्ग कितना भी कठिन क्यों न हों, मनुष्य को कभी अपना कर्तव्य नहीं भूलना चाहिए।

09-10-2026 प्रात:मुरली ओम् शान्ति "बापदादा" मधुबन

ये अव्यक्त इशारे -

परोपकार की भावना से सम्पन्न बन

अपकारी पर भी उपकार करो

जो स्वयं के प्रति इच्छा मात्रम् अविद्या है, अखण्ड दानी है, वही परोपकारी है।

जैसे बाप ने स्वयं का समय भी सेवा में दिया। स्वयं निर्मान बन बच्चों को मान दिया।

पहले बच्चे - नाम बच्चे का काम अपना। काम के नाम की प्राप्ति का भी त्याग किया। नाम में भी परोकारी बने।

ऐसे फालो फादर करो।

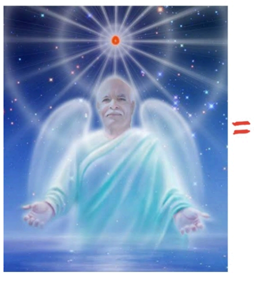

=

बाप समान

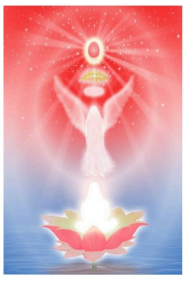

Points: ज्ञान योग धारणा सेवा M.imp.

If you wish to stay connected, Here is the link

WhatsApp

TELEGRAM

WORLD WIDE WEB

BKdrluhar

Mind maps are Available on WhatsApp and Telegram Only

अव्यक्त बापदादा:

वरदान का फल निकालने के लिए बार-बार वरदान को स्मृति में लाओ। स्मृति स्वरूप के स्थिति में स्थित रहो।

AV: 30/11/2009
Revise: 12/4/26

All वरदान slogans Sept 26 → Click

All अव्यक्त इशारे Sept 26 → Click

All वरदान, slogans and अव्यक्त इशारे At Single place → Click

अव्यक्त बापदादा:

आजकल के जमाने के हिसाब से तो बातें बहुत बदलती जाती हैं। गवर्मेन्ट के कायदे भी बदलने हैं, मनुष्यों की वृत्ति भी बदलनी है। तो हर एक के जीवन में व्यर्थ बातें तो आनी ही हैं, तो व्यर्थ को समाप्त करने के लिए समर्थ संकल्प चाहिए। वेस्ट को खत्म करने के लिए बेस्ट संकल्प चाहिए। तो रोज़ की मुरली में जो वरदान, स्लोगन आता है उसे सुनो। यह वरदान ही श्रेष्ठ संकल्प है। जब व्यर्थ आवे तो श्रेष्ठ संकल्प मन को चाहिए। मन खाली नहीं रह सकता है। मन को कुछ न कुछ संकल्प चाहिए। तो व्यर्थ वेस्ट को बेस्ट करने के लिए आपको यह वरदान और स्लोगन आदि के शब्द मन को चेंज करने के लिए चाहिए।

Remedy

Subtle Psychology

AV: 15/03/2010
Revise: 31/05/2026

अभी बापदादा ने देखा कि बच्चों को माया भी अब तक छोड़ती नहीं है उनका भी प्यार है। और आजकल दो रूपों में विशेष माया भी चांस लेती है। दो रूप में आती है - एक व्यर्थ संकल्प और दूसरा कहीं-कहीं कभी कभी यह भी लहर है जो मैंने किया वा सोचा मैं ही राइट हूँ मैं कम नहीं हूँ। यह लहर फैली हुई है - मैं ही राइट हूँ लेकिन जो कनेक्शन में आते हैं या निमित्त बने हुए हैं वह भी आपके विचार को साथ देते हैं! दूसरों की भी वेरीफिकेशन मिलनी चाहिए।

Attention Please..!

यह व्यर्थ संकल्प टाइम वेस्ट करते हैं। इसलिए बापदादा रोज की मुरली मनन करने के लिए सेवा करने के लिए होमवर्क में रोज देते हैं। अगर मनन करो या मनन करते-करते मगन हो जाओ तो यह रोज का होमवर्क मन को बिजी करने का साधन है।

Example

सुनना और मनन करना या मगन हो जाना यह बापदादा रोज का होमवर्क इसीलिए देता है। जैसे बच्चों को होमवर्क इतना ज्यादा दे देते हैं जो उनकी बुद्धि करने में बिजी रहे। ऐसे रोज की मुरली उसमें चार ही सबजेक्ट का होमवर्क है। मन्सा का भी है वाणी का भी है कर्म का भी अटेन्शन और दिव्यता का इशारा होमवर्क है। तो होमवर्क में बिजी रहेंगे तो व्यर्थ संकल्प के आने की मार्जिन नहीं रहेगी।

समझा?

इस विधि को अपनाते रहेंगे तो व्यर्थ संकल्प स्वत: ही आपसे विदाई ले जायेंगे

क्योंकि बापदादा ने देखा याद की यात्रा पर सभी का नम्बरवार अटेन्शन है वाचा सेवा में भी अटेन्शन है। लेकिन अभी अपने संस्कार या दूसरों के संस्कार को परिवर्तन करना यह स्वभाव संस्कार जिसको रॉयल रूप में आप कहते हो नेचर मेरी नेचर है भाव नहीं है नेचर है यह धारणा की सबजेक्ट अभी भी रॉयल रूप में आती रहती है। तो बापदादा आजकल यही इशारा देते हैं कि जो भी धारणाओं में कमी होती है उसको अभी विशेष अटेन्शन दो।

AV: 24/10/2010

Revise: 14/06/2026

अमृतवेला और साकार बापदादा के महावाक्य

12.2 अमृतवेले की विशेषतायें

(ए) मीठे बच्चे, दिन में भल काम करो, परन्तु अमृतवेले 4 से 5 बजे तक बैठ कर याद करो, तो बहुत **सुख फील होगा।** मनसा, वाचा, कर्मणा सबको सुख देने का ही पुरुषार्थ करना है। **अतीन्द्रिय सुख का अनुभव करने के लिए अमृतवेले विशेष एकान्तवासी बनो।** रूहानी कमाई वाले बच्चे शरीर निर्वाह करते हुए भी सुबह उठ कर बहुत-बहुत प्यार से बाप को याद करेंगे। **आत्मा उड़ती रहेगी** और बाप समान रहमदिल बन अपने ऊपर और सर्व के ऊपर रहम करेगी। सबको बाप का परिचय देंगे। नये-नये बहुत ऐसे भी निकलेंगे जो पुरानों से भी तीखे जायेंगे। मार्जिन है। अमृतवेले याद में बैठने की आदत पड़ जाये, तो बड़ा मजा आयेगा।

(ऐ) बाप ने समझाया है **खुशी का पारा चढ़ेगा अमृतवेले।** दिन और रात को वायुमण्डल बहुत गन्दा रहता है, उस समय याद मुश्किल रहती है। अमृतवेले का समय गाया हुआ है। उसी समय सभी आत्मायें थक कर, शरीर से डिटैच होकर

सो जाती हैं। वह है शुभ-मुहूर्त। ऋषि-मुनि, भक्त लोग भी अमृतवेले उठ कीर्तन आदि करते हैं क्योंकि उस समय शुद्ध वायुमण्डल रहता है। इसलिए अमृतवेले के शुभ-मुहूर्त में बाप को बहुत प्यार से याद कर, खुशी का पारा चढ़ाना चाहिए। चलते-फिरते भी याद का अभ्यास करना है। सवेरे उठ कर याद करने से उसका **नशा फिर सारा दिन रहेगा।**

(ओ) बाबा कहते हैं सवेरे उठ बाप को याद करो और विचार सागर मंथन के लिए अमृतवेले का टाइम अच्छा है। **विचार सागर मंथन करने से मक्खन अच्छा निकलता है।** विचार सागर मंथन करना है कि भगवान का परिचय सबको कैसे दें?

(औ) मीठे बच्चे, **अमृतवेला विशेष प्रभु-पालना की वेला है। इसका** महत्व जान, पूरा लाभ लो। कहाँ भी मूँझो तो बाप से पूछो। तार में, चिट्ठी में अथवा फोन पर पूछ सकते हो। **फोन सवेरे-सवेरे झट मिल सकता** है क्योंकि उस समय सिवाय तुम्हारे, बाकी सब सोये रहते हैं। बाप श्रीमत देते हैं — मीठे बच्चे सवेरे-सवेरे उठ कर बाप की याद में बैठो, तो पूरा वर्सा मिलेगा।